

# शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ : जीवन की अनुपम अभिव्यक्ति



**पल्लवी जालान**

शोधार्थी

बोधकथा शोध संस्थान

शिवलोक, गोरखपुर उ.प्र.

**प्रस्तावना** – भारतीय कथा परम्परा ने प्राचीन काल से ही हमारे समाज की सामूहिक स्मृति, नैतिकता, मानवीयता, सांस्कृतिक निरन्तरता को समृद्ध करती रही हैं। बोधकथाएँ तो जीवन के हर क्षेत्र में रची बसी हैं। इनमें ग्रामीण परिवेश, सांस्कृतिक संस्कार और आधुनिक वैज्ञानिक चेतना का सन्तुलित समन्वय दिखाई देता है, जिसमें जीवन की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

प्रस्तुत शोध आलेख 'शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ : जीवन की अनुपम अभिव्यक्ति' विद्यार्थी जीवन के सकारात्मक सोच, सकारात्मक मनोविज्ञान और व्यक्तित्व विकास पर केन्द्रित है। इस शोध आलेख में यह दर्शाया गया है कि सकारात्मक आत्मचर्चा, लक्ष्य निर्धारण और मानसिक अभिरुचि के माध्यम से व्यक्ति अपनी क्षमता को बढ़ाकर सफलता को प्राप्त कर सकता है।

बोधकथाएँ जीवन के गूढ़ रहस्यों, नैतिकता और मानवीय अनुभवों को सरल भाषा में समझाने वाली एक अनुपम अभिव्यक्ति हैं। ये कथाएँ विशेषकर महात्मा बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं से प्रेरित स्वार्थ, मोह और भय से ऊपर उठकर करुणा, सत्य और आत्म-ज्ञान का मार्ग दिखाती हैं।

**बीज-शब्द** – बोधकथाएँ, सांस्कृतिक परम्पराएँ, मानसिक अभिरुचि, सकारात्मक आत्मचर्चा, वैज्ञानिक चेतना, आत्मज्ञान, अनुपम अभिव्यक्ति।

**शोध आलेख**– कथाएँ, किस्से या बोधकथाएँ किसी भी समाज के विकास में, उन्नति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारे भारतवर्ष की सभ्यता व संस्कृति के विकास में तो इनकी भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारतीय कथा परम्परा, हमारे समाज की सांस्कृतिक एकता, नैतिक चेतना और जीवन दृष्टि

का मूल आधार रही है। इसका उत्थान प्राचीन काल में वैदिक आख्यानो, पुराणों, महाकाव्यों, जातक कथाओं, लोककथाओं तथा दन्त कथाओं से हुआ है।

बोधकथाएँ जीवन की गहराइयों को जानने समझने, उनमें रची बसी अनमोल शिक्षाओं को आत्मसात करने और यथार्थ से सरोकार होने का सबसे सरल व प्रभावशाली माध्यम हैं। बोधकथाएँ शील, धैर्य, करुणा और आत्म विश्वास जैसे मानवीय मूल्यों को बड़े ही सरल तरीके से प्रस्तुत करती हैं। जातक कथाओं से लेकर आधुनिक बोधकथाओं तक इनका उद्देश्य मनुष्य के चरित्र-निर्माण व व्यवहार में सुधार लाना है। ऐसे समय में शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ जीवन की अनुपम अभिव्यक्ति बनकर अपने ज्ञान के प्रकाश से अज्ञानता रूपी अन्धकार को नष्ट करते हुए विद्यार्थियों के पथ को आलोकित कर रही हैं।

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-एक में 'कथनी और करनी' बोधकथा है, जिसमें एक बहेलिया है जो जंगल में शिकार करता है। उसी जंगल में एक सन्त रहते थे। सन्त जी से बहेलिया बहुत प्रभावित था। एक दिन बहेलिए ने एक तोता पकड़ा और पिंजरे में बन्द कर उसे सन्त जी को दे दिया। सन्त जी उसे साधुवाद देते हैं। तोता आश्रम में रहने लगा। सन्त जी उसे मन्त्र सिखाते हैं और लोगों का स्वागत करना भी सिखाते हैं। तोता सब कुछ सीख लेता है। अब जो भी लोग आते हैं उनका स्वागत करना, मन्त्र सुनाना।

एक दिन सन्त जी ने उसे मोक्ष का मार्ग बताया और याद कराया- पिंजरा छोड़ो, ऊँचे उड़ो। तोते ने यह याद कर लिया। एक दिन तोते को जब भोजन दिया गया तो पिंजरा बन्द करना भूल गया। तोते ने भोजन कर लिया, पिंजरा खुला है, वह बाहर झाँकता है और निकलता है। उसे बहुत आनन्द आता है। फिर अन्दर पहुँचकर सिर बाहर निकालकर कहता है-

पिंजरा छोड़ो ऊँचे उड़ो। लेकिन फिर अन्दर दुबककर बैठ जाता है। आश्रम में आये हुए लोग परेशान हैं। सन्त जी कहते हैं— हममें से बहुत से लोगों की यही स्थिति है। हम बातों को तोते की तरह रट लेते हैं लेकिन उन्हें कार्य का स्वरूप नहीं प्रदान कर पाते हैं।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि " प्रिय विद्यार्थियों, जो आप कहते हैं, जब तक वह नहीं करेंगे यानी आपकी कथनी और करनी का अन्तर जब तक समाप्त नहीं हो जायेगा, कथनी और करनी के बीच की दूरी शून्य नहीं हो जायेगी, तब तक आपको कोई उपलब्धि मिल नहीं पायेगी। आपको कहा जाता है ऐसे कीजिए, आपको कहा जाता है जैसे कीजिए तो आप अपना टाइम-टेबल बनाते हैं, अपनी रूटीन फिक्स करते हैं, लेकिन क्या आप वैसा कर पाते हैं ? जब तक आप कथनी और करनी के बीच की दूरी को शून्य नहीं कर पायेंगे, आपको उपलब्धि नहीं मिल पायेगी, यह बहुत बड़ा मन्त्र है।"1

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-एक के 'शिष्टाचार' बोधकथा में मनोचिकित्सक के पास दो व्यक्ति इलाज के लिए लाये जाते हैं। मनोचिकित्सक दोनों को एक ही कमरे में रखता है और खिड़की के परदे से छिपकर उनकी स्थिति को देखता है और बाद में ट्रीटमेन्ट की बात सोचता है। मनोचिकित्सक परेशान हैं क्योंकि एक बोलता तो दूसरा कई घण्टे तक उसे चुपचाप सुनता और दूसरा बोलता तो पहला कई घण्टे तक चुपचाप सुनता। आखिरकार मनोचिकित्सक उनसे पूछता है तो वे एक साथ कहते हैं कि - क्या आपको बातचीत का शिष्टाचार नहीं मालूम है, पर हमें तो मालूम है। जब कोई बोले तो सुनने वाले को चुप रहना चाहिए और हम लोग वही करते हैं।

मनोचिकित्सक ने अपनी डायरी में लिखा कि आज जीवन में पहली बार मुझे ज्ञात हुआ कि क्या पागल व्यक्ति भी शिष्टाचार निभा सकता है। इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, आप अपनी ऊर्जा का संचय कीजिए, उसे उचित स्थान पर खर्च कीजिए और बातचीत के शिष्टाचार को समझिए। अगर आप इसे समझते हैं तो यह जीवन भर आपके काम आयेगा। ऐसा नहीं है कि हम यहाँ बोल रहे हैं और इसके बाद यह

काम खत्म हो जायेगा। शिष्टाचार बहुत ही महत्वपूर्ण है। जीवन के तमाम कदमों पर, तमाम परिस्थितियों में आपको इससे दो-चार होना पड़ता है। ऐसा न हो कि आपमें शिष्टाचार की कमी रह जाये और वहीं असफल हो जायें। तो आप ऐसी स्थिति ही क्यों आने देंगे।"2

शिव नारायण सिंह की विलक्षण प्रतिभा के बारे में समीक्षात्मक लेख 'धरती पर धूल-कण खोजती वर्षा की बूँदें' के माध्यम से सर्वेन्द्र विक्रम सिंह कहते हैं कि - "मैं शिव नारायण सिंह को तब से जानता हूँ जब वे अपने जीवन लक्ष्य के लिए कर्मक्षेत्र में पदार्पण कर रहे थे। मुझे लगा कि यह व्यक्ति विलक्षण प्रतिभा का धनी है और एक-न-एक दिन अवश्य ही कुछ नया करेगा। मुझे हर्ष है कि शिव नारायण सिंह का यह प्रयोग सफलता पूर्वक आगे बढ़ रहा है और वे 'विद्यार्थियों से...' के माध्यम से देश-दुनिया के युवाओं को प्रेरणा प्रदान कर एक ओर प्राचीन भारतीय परम्परा को नये वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्राण-प्रतिष्ठित करते हुए नये विश्व की संरचना में लगे हुए हैं।"3

भारतीय संस्कृति में पारिवारिक-संस्कारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है। हमारे यहाँ वरिष्ठ जन ही संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। परन्तु जिस प्रकार चन्द्रमा और सूर्य को ग्रहण लग जाता है, उसी प्रकार हमारे संस्कारों को भी ग्रहण लगने लगा है। नैतिक मूल्य जर्जर हो कर गिर रहे हैं, परम्परागत संस्कार पश्चिमीकरण को भेंट चढ़ गये हैं। पूँजी, पैसे और भौतिकता ने नये मूल्य और रिश्ते स्थापित कर लिये हैं।

ऐसे में आधुनिकीकरण और बाजारीकरण के सम्बन्ध में विजय बहादुर सिंह का कथन है कि - "विश्व बाजारवाद के पीछे छुपे खतरनाक मन्सूबे के लिए अंतरराष्ट्रीय अपराधी सरगना की तरह खड़ा उत्तर पूँजीवाद तमाम प्राचीन सभ्यताओं को हाँक कर ले जाता, आधुनिकता और उसकी गुलामी से लगा पश्चिम का विज्ञानवाद सच्चा औद्योगिकी का विषय है, जो हिन्दी अकादमस बेचारी की ओर चिन्ताओं को रेखांकित करता है।"4

भूमण्डलीकरण के प्रभाव से हम ऐसे सांस्कृतिक युग में पहुँच गये हैं कि हम न तो पुरातनता को ही पूरी तरह छोड़ पा रहे हैं और न ही नवीनता को पूर्णतः स्वीकार कर पा रहे हैं। इसलिए हम बहुत बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं। संक्रमण की इस दशा ने

संसार की हर संस्था को दुष्प्रभावित किया है। 'परिवार' नामक संस्था सबसे अधिक प्रभावित हुई है।

इस दौर में शिवनारायण सिंह की बोधकथाएँ जनपक्षधर बनकर हमारे सामने उपस्थित हुई हैं। 'मूल्यों के निर्माण कलश' में समीक्षात्मक लेख 'बोधकथाओं की सार्थकता सिद्ध करने का भगीरथ प्रयास' के माध्यम से डॉ. रेवती रमण जी कहते हैं- "बोधकथाएँ मर्म को छू लेती हैं तो ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं। ऐसे ही साहित्य की कोख से अपनत्व, आत्मीयता, सौहार्द्रता की सुगंध उत्पन्न होती है। मनुष्य बड़े स्वार्थ और हित के लिए छोटे स्वार्थ का त्याग करता है। त्याग, समर्पण, स्वार्थ, कष्ट, सहिष्णुता का बोध ऐसे ही साहित्यों के द्वारा होता है। सभ्यता और संस्कृति के अभाव में साहित्यों का महत्त्व निर्विवाद है। साहित्य संस्कृति के विरुद्ध नहीं होते हैं, वरन् कालांतर में संस्कृति के ही अंग बन जाते हैं। वास्तव में ऐसे साहित्य-संस्कृति की जड़ता को दूर करके उसे गतिशील बनाए रखते हैं। बोधकथाओं में मनुष्य की वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन की समृद्धि हेतु मानवीय भाव उत्पन्न होते हैं।" 5

इसी समीक्षात्मक लेख में उन्होंने यह भी कहा है कि- "विद्यार्थियों से..." पुस्तकें एक ऐसी दिव्य ज्योति धारा है, जिनसे बोधकथा परम्परा को नवीन आलोक प्राप्त हुआ है। बोधकथा परम्परा को 'ईसप' की कहानियों ने किसी तरह से जीवित रखा, किन्तु 'विद्यार्थियों से...' ने इस परम्परा को गतिशीलता प्रदान की है। इनके द्वारा तो बोधकथा परम्परा में जान-सी आ गई है। मेरा विश्वास ही नहीं वरन् यही सत्य है। साहित्य जगत् में इनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा।" 6

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-दो की 'आतुरता' बोधकथा में एक तपस्वी की कथा है। जो जंगल में तपस्या कर रहे थे। नारद जी उधर से गुजरे तो तपस्वी ने उनसे आतिथ्य स्वीकार करने का निवेदन किया। नारद जी आतिथ्य स्वीकार कर उनकी कुटी में पहुँचते हैं। आतिथ्य सत्कार के बाद जब नारद जी चलने को होते हैं तो तपस्वी उनसे कहते हैं कि जब आप नारायण जी से मिलियेगा तो मेरा यह निवेदन उनसे कीजिएगा कि मुझे उनके दर्शन कब होंगे।

नारद जी विष्णुलोक पहुँचकर नारायण जी से मिले, हालचाल हुआ और लौटते वक्त तपस्वी की बात

कहते हैं। तो नारायण जी कहते हैं उस तपस्वी को कई जन्म लेना पड़ेगा तब दर्शन होगा। नारद जी वहाँ से विदा लेकर पृथ्वीलोक आते हैं और तपस्वी से नारायण जी की बात बता देते हैं। तपस्वी बहुत प्रसन्न हुए कि मुझे प्रभु के दर्शन होंगे भले कई जन्म क्यों न लेना पड़े। तपस्वी पूरे मनोयोग से तपस्या करने लगते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप प्रभु उन्हें दूसरे दिन ही दर्शन दे दिये।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आप क्या चाहते हैं, आपकी क्या इच्छा है, अब मुझे यह बताने की जरूरत नहीं है। यह तो आपने स्वयं तय किया है, यह आपका अपना तय किया हुआ है, यह आपका अपना विचार है, यह आपकी अपनी सोच है तो कोशिश भी आपको ही करनी होगी। आपको खुद ही लगना होगा। तपस्वी लगे और रिजल्ट आपने देखा, दूसरे ही दिन आ गया। आप भी लगिए, रिजल्ट इसी समय आ जाएगा, दूसरे दिन की जरूरत ही नहीं होगी आपको। अभी लगने लगेगा कि आप अपने लक्ष्य के बहुत करीब हैं, आपको आपका उद्देश्य मिला हुआ है, जो आप बनना चाहते हैं वह तो आप बन ही रहे हैं, बहुत कुछ बन चुके हैं। आप कोशिश कीजिए, लगिए, निश्चित रूप से आपको आपका उद्देश्य मिलेगा।" 7

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-दो की 'अद्भुत शक्ति' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी बच्चों में शक्ति का संचार करते हुए कहते हैं कि- प्रिय विद्यार्थियों, जो भी अद्भुत शक्ति है, आपको ऊँचाई पर पहुँचाने वाली, आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचाने वाली वह आपके अन्दर ही निहित है। जरूरत है, मन में झाँककर देखने की। लेकिन झाँकेंगे कैसे ? अपने ही अन्दर कैसे झाँकेंगे ? मुँह खोलना पड़ेगा ? कितना बड़ा मुँह खोलना पड़ेगा ? नहीं-नहीं, मुँह नहीं खोलना पड़ेगा। मन के अन्दर झाँकने के लिए मन की आँखें चाहिए और मन की आँखें कहाँ मिलती हैं ? मन की आँखें मनन करने में हैं। जो भी विषय-वस्तु आपके सामने है, आप उस पर मनन कीजिए, उस पर सोचिए, विचारिए, देखिए आपको मन की वह अद्भुत शक्ति उसी में से निकलती हुई दिखाई देगी, प्रस्फुटित होती दिखाई देगी।" 8

सामाजिक चेतना का विकास किसी भी समाज के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज में समानता, स्वतन्त्रता और भाईचारे की

भावना को बढ़ावा देता है। यद्यपि कि भारतीय समाज में सामाजिक चेतना के विकास में अनेक प्रकार की बाधाएँ हैं जो पारम्परिक मान्यताओं, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों एवं शिक्षा की कमी के कारण उत्पन्न होती हैं। इन बाधाओं का निवारण करना समाज में समग्र बदलाव के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ सामाजिक चेतना की पराकाष्ठा को अपने अन्दर समाहित की हुई हैं। 'विद्यार्थियों से...' खण्ड-दो में 'अनदेखे का भय' नामक बोधकथा के माध्यम से वे कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, अब वक्त आ गया है, जो साल भर आपने पढ़ा है उसे एक साथ प्रस्तुत करना है। अब यह देखना है कि आपने वास्तव में पढ़ाई की है या लापरवाही की है या समय पास किया है। बातें तो बहुत हुई हैं लेकिन उनका सार अब सामने आने वाला है और यही सार कल आपके जीवन का सार बनेगा क्योंकि यह वार्षिक परिणाम है अर्थात् आप इस एक वर्ष में जीवन में एक स्टेप ऊपर उठ जाते हैं, पहुँच जाते हैं और ऐसे ही उठते-उठते एक दिन वहाँ पहुँचते हैं जहाँ आपका उद्देश्य है, लक्ष्य है। अब इस समय जैसी स्टेपिंग होगी, लक्ष्य की महत्ता भी उसी के अनुरूप, अनुकूल होगी। अतः पूरे मनोयोग से लगें, किसी तरह का कोई भय, डर नहीं होना चाहिए।" 9

कथाओं या बोधकथाओं का कलेवर अपने आपमें एक विशाल कलेवर है। जिसके सन्दर्भ में डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त का कथन आवश्यक हो उठता है, "जब किसी युग विशेष में जीवन का दृष्टिकोण बौद्धिकतापरक, यथार्थवादी, वस्तुवादी एवं व्यावहारिक अधिक होता है तो उसमें गद्य को अधिक प्रोत्साहन मिलता है। जबकि इसके विपरीत जीवन में भावुकता तर्क-शून्यता, आध्यात्मिकता एवं काल्पनिकता की प्रतिष्ठा होने पर उसमें अभिव्यक्ति पद्य का माध्यम अपनाती है।" 10

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-तीन की बोधकथा 'परोपकार' के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आपने देखा, इतना अथाह समुद्र है, कितनी अपार जलराशि है उसके पास लेकिन सब बेकार है, किसी काम की नहीं है। कोई प्यासा उसे पी नहीं सकता, अपनी प्यास नहीं बुझा सकता तो वह जल राशि किस काम की है? नदी के पास उतनी जलराशि नहीं है फिर भी, जो भी है उसे

वह अनवरत बाँटती रहती है इसलिए उसका जल मीठा है, उसका सम्मान है, उसकी प्रतिष्ठा है, उसकी पूजा होती है। आप इस दिशा में विचार कीजिए कि आपके पास जो भी है, जितना भी है उसे आप कैसे उपयोगी बना सकते हैं, कैसे उसका लाभ दूसरों को पहुँचा सकते हैं, कैसे कोई दूसरा आपसे लाभान्वित हो सकता है। अगर आप इस गुरुतर दायित्व को निभाने की कोशिश करते हैं, निभाने के प्रति आप समर्पित हैं और आपकी ऐसी सोच है तो निश्चित रूप से आप भी गुरु के सदृश पूज्य हो सकते हैं।" 11

'विद्यार्थियों से...' खण्ड तीन की बोधकथा 'समय की महत्ता' में एक एम.बी.ए., गोल्ड मेडलिस्ट विद्यार्थी की कथा है। वह एक कम्पनी में मैनेजर पद के इंटरव्यू के लिए दस मिनट देर से पहुँचता है। मालिक उसे अपने पास बुलाता है और कहता है, तुम लेट हो इसलिए मैं तुम्हें मैनेजर के पद पर नहीं नियुक्त कर सकता। तुम चाहो तो असिस्टेंट मैनेजर के पद पर रह सकते हो। उसे असिस्टेंट मैनेजर के पद से सन्तोष करना पड़ा।

उसने कहा- जब मुझे असिस्टेंट मैनेजर बनाया गया तब मालिक ने कहा- समय पालन से बढ़कर कोई व्यावसायिक योग्यता नहीं होती। अब मैं समय के महत्त्व को समझ गया हूँ। मैं इस पद पर रहते हुए कोशिश कर रहा हूँ कि अगर मैंने समय का प्रबन्धन कर लिया तो कल मैं मैनेजर हो जाऊँगा।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, समय ही जीवन है, समय ही जीवन की गति है, समय ही जीवन की प्रगति है, समय ही जीवन की सफलता का सोपान है, समय ही वह पैमाना है, जिसने इसे साध लिया फिर उसे कुछ और साधने की जरूरत नहीं है। मैंने अभी आपको बताया कि एक क्षण का महत्त्व क्या है। आपको नहीं लगता लेकिन मुझे लगता है, समय बोलता है, समय सुनता है, समय देखता है और समय को समझ पाना ही वास्तविक योग्यता है। जिसने समय को समझ लिया, वह सब कुछ समझ सकता है और जिसने समय को नहीं समझा, वह सब समझकर भी कुछ नहीं कर सकता है।" 12

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-चार की 'सम्मान' बोधकथा में एक कंजूस सेठ की कथा है जो बड़ा धार्मिक था सत्संग में उपस्थित रहता। ऐसे ही एक

जगह सत्संग चल रहा था। वह प्रतिदिन उस सत्संग में जाया करता। जब भण्डारा का दिन आया तो भण्डारा के लिए कुछ-न-कुछ चढ़ावा चढ़ाना था। जिसने भी सत्संग में भाग लिया था, जो भी उसमें उपस्थित रहा था, ज्ञान-पान किया था, अपनी हैसियत से, अपनी व्यवस्था से, कुछ-न-कुछ दान कर रहा था।

जब इसकी बारी आती है तो यह सेठ भी एक मैले-कुचैले रुमाल में कुछ रखा रहता है। ले आता है, महात्मा के सामने उड़ेलता है। महात्मा तो इसे पहले से ही जानते थे कि यह बहुत भारी सेठ है। वे इसकी गतिविधियों को भी जानते थे लेकिन कभी कोई टीका-टिप्पणी का अवसर ही नहीं मिला। सत्संग की बात थी। सत्संग शुरू होता वह आता, और सत्संग खत्म होता, चला जाता।

आज वह महात्मा जी के करीब पहुँचा है। वह भी उस भण्डारा में अपनी ओर से कुछ देना चाहता है। जैसे ही वह अपना रुमाल खोलकर उड़ेलता है महात्मा के सामने, उस रुमाल में वह अशर्फियाँ बाँधे रहता है, अशर्फी समझते हैं न आप, वह अशर्फियाँ रखे रहता है, तो जैसे ही महात्मा के सामने उड़ेलता है, महात्मा देखते हैं तो उसी समय महात्मा के मुँह से निकलता है- सेठ जी, उधर न जाओ, इधर आओ! तुम मेरे बगल में बैठो! तुम्हारी जगह यहाँ है।

सेठ को बात बड़ी आश्चर्यजनक लगती है। बात तो आपको भी आश्चर्यजनक लग रही होगी। प्रतिदिन सेठ उधर किनारे बैठा प्रवचन सुना करता था और आज जब अशर्फियाँ उड़ेल रहा है, तो महात्मा जी कह रहे हैं- सेठ जी, तुम्हारी जगह उधर नहीं है, आओ, मेरे बगल में बैठो।

सेठ कहता है- आप मेरी इन अशर्फियों का, इन रूपों का सम्मान कर रहे हैं, न कि मेरा सम्मान कर रहे हैं और चला जाता। महात्मा ने कहा- ये अशर्फियाँ तुम्हारे पास कल तक थीं, अभी थोड़ी देर पहले तक थीं लेकिन मैंने तुम्हारा सम्मान नहीं किया। तुम्हारे इस सम्मान का कारण कुछ और है। तुम भ्रम में मत रहो, तुम्हारे सम्मान का कारण है तुम्हारा त्याग, तुम्हारा मोहभंग होना।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- “प्रिय विद्यार्थियों, जिस रास्ते पर आप चल रहे हैं, जब आपकी उपयोगिता बढ़ जाएगी तब भी आपको त्याग करना होता है अपनी उन

आवश्यकताओं का जो आपको अपने लिए आवश्यक लगती हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि उनके बिना आपका काम नहीं चल सकता है। अगर आप उनका त्याग करते हैं, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए अपने आपको समर्पित कर देते हैं, तो निश्चित रूप से आप महापुरुषों की श्रेणी में आ जाते हैं।

यह सारी यात्रा महापुरुष बनने की ही है। आपको, अपने आपको यूनिक सिद्ध करने की है और आप तभी कर पायेंगे जब आप त्याग सीखेंगे। त्याग कला सीखने की यही उम्र है, अभी आप प्रारम्भ कर दें। इस समय का त्याग कुछ और है, मैंने बताया, कुछ समय के बाद कुछ और त्याग करना होगा। लेकिन यहाँ उस समय की बात कर रहा हूँ, जब आप कुछ बन जायेंगे, आपमें कुछ हुनर होगा, आप कुछ कर सकने की स्थिति में होंगे।”<sup>13</sup>

समीक्षात्मक लेख 'जीवन के लिए शिक्षा' में कृष्ण कुमार आष्ठाना कहते हैं कि - “व्यक्ति के चरित्र निर्माण के सम्बन्ध में प्रसिद्ध यूनानी विचारक सुकरात का कहना है कि आपस में विचार-विमर्श एवं स्वयं के मस्तिष्क का विकास करके व्यक्ति सही एवं गलत में अन्तर महसूस कर सकता है। अच्छे चरित्रवाले व्यक्तियों के द्वारा ही एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। मस्तिष्क का विकास या आपसी विचार-विमर्श का सीधा- सादा माध्यम शिक्षा है, किन्तु आज के इस दौर में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो चुका है। आज की शिक्षा छात्रों के नैतिक विकास में योगदान देने में पूर्णतः असफल सिद्ध होती हुई प्रतीत होती है। इसी शिक्षा-पद्धति में भी एक सूक्ष्म दीपक की लौ जलती हुई प्रतीत हो रही है श्री सिंह के रूप में, जो अपनी बोधकथाओं के माध्यम से छात्रों का नैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक हर क्षेत्र में विकास करने का प्रयत्न कर रहे हैं।”<sup>14</sup>

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं की चेतनासंपन्नता के सन्दर्भ में समीक्षात्मक लेख 'मानव निर्माण के अप्रतिम शिल्पी' में सतीश चन्द्र भास्कर कहते हैं कि - “छात्रों को पृथक्-पृथक् कोणों से जाग्रत एवं चेतनासंपन्न बनाने के कारण ये कथाएँ और महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। संघर्षों से भरे मानव जीवन का बोध कराती छल, प्रपंच, आडंबर एवं जीवन के कटु सत्यों से परिचित कराती मनोविनोदार्थ कही गई कथाएँ मूर्खों को उनकी मूर्खता, वंचकों को उनके वाक्-छल एवं शोषकों को उनके शोषण का बोध ही

नहीं कराती हैं, अपितु प्रलोभनों को नकारते हुए प्रतिरोध के लिए छात्र-छात्राओं को सजग भी करती हैं। छोटे व स्पष्ट वाक्य बिम्ब, जीवन्त शब्द, ग्राह्य भाषा-कथा को गति ही नहीं ऊर्जा भी प्रदान करते हैं।"15

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-चार की 'साक्षी भव' बोधकथा में राजदरबार में राजा ने कुछ अन्धों को हाथी के पास भेजकर हाथी के बारे में बताने के लिए कहता है सभी उसे स्पर्श करके बताना शुरू करते हैं— जिसने हाथी का पैर पकड़ा, पैर छुआ, उसने कहा कि हाथी खम्भे के समान होता है। जिसने उसकी पूँछ पकड़ी, उसने कहा कि हाथी लाठी के समान होता है। जिसने उसकी सूँड़ पकड़ ली, कहा कि हाथी अजगर के समान होता है। जिसने उसका सिर पकड़ा, कहा हाथी घड़े के समान होता है। किसी ने उसका कान पकड़ा, कहा हाथी सूप के समान होता है और जिस किसी ने उसकी पीठ छुई, उसने कहा हाथी तो दीवार की तरह होता है। जिसने उसका दाँत पकड़ा, उसने कहा कि हाथी हल की तरह होता है।

हाथी वही है, देखने वाले भिन्न-भिन्न हैं, जो अन्धे हैं। जिसने जिस रूप में उसे देखा, जैसा महसूस किया, उसी तरह अपनी बात रखी। सभी को अगर अलग-अलग देखा जाए, तो कहीं से भी हाथी समग्र रूप से एक्सप्लेन नहीं हो पा रहा है। लेकिन अगर सभी को मिला लिया जाए और महसूस किया जाए तो निश्चित रूप से हाथी एक्सप्लेन हो रहा है, हाथी का वह स्वरूप हमारे सामने आ रहा है कि उसकी पीठ बहुत बड़ी है, मजबूत है, वह दीवार का काम कर सकती है। उसके कान सूप हो सकते हैं। उसके दाँत हल जैसे होते हैं। उसकी पूँछ लाठी के समान मजबूत होती है। उसके पैर मजबूत खम्भे हो सकते हैं।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि— "प्रिय विद्यार्थियों, जीवन साक्षी भाव है। यह क्षण जो बीत रहा है, इस समय जो महसूस कर रहे हैं, जो आपकी महसूसना है इस समय की, बिल्कुल सत्य है। जो क्षण आप यहाँ गुजारते हैं, जो समय यहाँ गुजारते हैं, जिन परिस्थितियों में यहाँ जीते हैं, उन्हें आप साक्षी भाव से आत्मसात् कर लें। जैसे मैंने अभी कहा महसूस करने वाली बात, महसूसना, जो चीजें आपके सामने जैसे घटती हैं, आप उनकी फीलिंग वैसे ही करें, आप उन्हें आत्मसात् करें, उन्हें अपने जीवन में उतारें, तो समझें कि आप अपने लक्ष्य

तक निश्चित ही पहुँचे हुए हैं।

आपको अपने लक्ष्य तक हर हाल में पहुँचना है। पहुँचने के प्रोसेस में आप हैं। लेकिन उसके लिए आपको चीजों को समेटना होगा, अपनी उन चीजों को जो आपको ईश्वर ने दी है, उनका समुचित उपयोग करना होगा। जो भी ऑर्गन्स हैं, उन्हें खोलकर रखिए, उनका समुचित उपयोग कीजिए। जो बातें बताई जाती है, उन्हें उसी मूल रूप में ग्रहण कीजिए, आत्मसात् कीजिए।"16

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-पाँच की 'कर्म प्रधान...' बोधकथा में शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि— "प्रिय विद्यार्थियों, यह मनुष्य ही है जिसके पास दुःख, तकलीफ, कष्ट, कठिनाइयाँ और अवसर हैं, बाकी किसी और के पास नहीं हैं। अगर आप अपने को मनुष्य समझते हैं, इस भूमि में आपका जन्म हुआ है, तो निश्चित रूप से आप वह सब कर सकते हैं। इसे आप सोचेंगे और करेंगे, क्योंकि इसीलिए आपका यहाँ आना हुआ है। आप अपना महत्व समझें, अपना कर्म समझें और उसे पूरा करने का जो अवसर है उसके प्रति समर्पित हो जायें, निश्चित कल आप अपने लक्ष्य पर होंगे।"17

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-छः की 'कोल्हू का बैल' बोधकथा में शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि— "प्रिय विद्यार्थियों, जरा सोचो, अगर आपके साथ भी वही हो तो इसे क्या कहा जाय ? जीवन वृत्ताकार नहीं है इसे तो फैलाव चाहिए, इसे तो विस्तार चाहिए। जिसने जीवन को विस्तार दिया समझो उसका जीवन सार्थक है। जिसने उसे संकीर्णता दी फिर कुछ कहने की जरूरत नहीं है। उसका वही हाल होगा जो कोल्हू के बैल का है, उसी वृत्ताकार परिपथ में घूमते-घूमते जीवन समाप्त हो जायेगा। जीवन को विस्तार देना होगा, जीवन में आनेवाली प्रत्येक घटना, क्रिया-प्रतिक्रिया, स्थिति-परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार कर उसे अपने उद्देश्य की दिशा में अग्रसारित करना ही जीवन लक्ष्य होना चाहिए। यदि आप ऐसा कर रहे हैं, तो निश्चित ही आप अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।"18

**निष्कर्ष** – इस प्रकार हम देखते हैं कि बोधकथाएँ वर्तमान समय में भी अति प्रासंगिक हैं। क्योंकि वे मनुष्य के मन की जटिलताओं को समझकर, मोह, लोभ और तृष्णा को त्यागकर एक शान्त, नैतिक, सार्थक और सफल जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं। वे

जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए मानसिक दृढ़ता, करुणा और जागरूकता विकसित करने का मार्ग दिखाती हैं।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में जीवन की अनुपम अभिव्यक्ति हुई है। जिसे प्रस्तुत करने में इन्हें पूर्ण सफलता मिली है। जो अपने उद्देश्य को सफल एवं सार्थक सिद्ध करके जनमानस की कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

### सन्दर्भ सूची-

1. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 20
2. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 67
3. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -65
4. सिंह विजय बहादुर - उपन्यास समय और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 19
5. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -71
6. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -71
7. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 115
8. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 146
9. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 282
10. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2007, पृष्ठ संख्या - 318
11. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 31
12. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 219
13. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 77
14. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 163 - 164
15. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 211
16. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 311
17. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 379
18. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...'; खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 629